दृष्टि नीचे करके रखते हैं। शनिदेव की इसी शापग्रस्त दृष्टि का प्रभाव एक अन्य पौराणिक कथा में भी नजर आता है। कल्पान्तर में जब भगवान श्री कृष्ण ने श्री गणेश के रूप में भगवान शिव और माता पार्वती के यहां अवतार लिया, तो पूरा कैलाश पर्वत क्षेत्र आनन्दमय वातावरण और उत्साह से भर गया। सभी देवी और देवता आशीर्वाद देनें और मंगलकामना के लिए कैलाश पर्वत पहुचें, जिसमें शनिदेव भी शामिल थे। शनिदेव को अपनी पत्नी का शाप याद था, इसलिए उन्होंने नवजात शिशु को बिना देखे ही आशीर्वाद दे दिया। शनिदेव का इस प्रकार आशीर्वाद देना माता पार्वती को ठीक न लगा, उन्होंने इस प्रकार के आचरण का कारण पूछा, तब शनिदेव ने सारी बात बताकर अपनी विवशता बताई, जिसे सुनकर माता पार्वती ने कहा, कोई भी शाप मेरे बालक का अहित नही कर सकता और शनिदेव को नवजात शिशु पर पूर्ण दृष्टि गोचर करके आशीर्वाद देने का आदेश दिया। पार्वती माता के आदेशानुसार शनिदेव ने जैसे ही नवजात शिशु पर दृष्टि डाली उसी समय नवजात शिशु का सिर धड़ से अलग हो गया। सिर रहित पुत्र को देखकर माता पार्वती मूर्च्छित होकर भूमि पर गिर पड़ी और पूरे कैलाश पर शोक की लहर दौड़ पड़ी। आगे कथा मिलती है कि भगवान विष्णु ने हाथी का सिर लगाकर बालक को फिर से जीवित कर दिया, तभी से नवजात शिशु का एक नाम गजानन (गज माने हाथी आनन माने मुख) पड़ गया, जिसे माता पार्वती ने स्वीकार कर लिया, पर क्रोध के आवेग में आकर शनिदेव को शाप दे दिया। वहां उपस्थित सभी देवी देवताओं ने माता पार्वती को शनिदेव के विवश होने की बात याद दिलाई, जिसे माता पार्वती पहले ही जानती थी और माता पार्वती को याद आया कि शनिदेव ने तो केवल उनकी ही आज्ञा का पालन किया था, इसलिए शाप को केवल एक टांग तक सीमित कर दिया और शनिदेव को अनेकों आशीर्वाद दिये। माता पार्वती के इसी शाप के कारण ही शनि देव लंगड़ाकर चलते हैं।

शनि ग्रह की पौराणिक कथा का ज्योतिषीय संबंध

शनि ग्रह की शापित दृष्टि जन्म पत्रिका के जिन भावों पर पड़ती है वहां विच्छेद, कष्ट और विघ्न की संभावना अधिक बढ़ जाती है साथ ही माता पार्वती के शाप के कारण लंगड़ाकर धीरे चलने से शनिदेव जन्म पत्रिका के जिस भाव में बैठे हों या दृष्टि गोचर करें उस भाव से संबंधित कार्यों में विलंब भी होता है। एक अन्य कथा के अनुसार शनिदेव की माता छाया भगवान भोलेनाथ की परम भक्ता थी, जब शनिदेव गर्भ में थे उस समय छाया को भगवान भोलेनाथ की पूजा और आराधना के कारण कई दिनों तक अपने खाने पीने की भी सुध नही रहती थी, जिसके कारण शनिदेव श्याम वर्ण के हो गये और जन्म के बाद सूर्य देव ने कहा तुम मेरे पुत्र नही हो और माता के छल के कारण शनिदेव को शाप भी दे दिया, कि तुम क्रूर दृष्टि और मन्दगति से चलने वाले हो जाओ, इसी कारण शनिदेव सूर्य ग्रह से और सूर्य शनिदेव से शत्रुता रखते हैं।

शनि अशुभ ग्रहों में गिना जाता है। यह पूरे 24 घंटों में केवल 2 मिनट (angle वाले मिनट) चलता है, सभी नौ ग्रहों में सबसे धीरे चलता है। इसलिए यह विलम्ब का कारक ग्रह है, किसी भी कार्य में होनें वाले विलम्ब को दर्शाता है। एक राशि में लगभग 2½ वर्ष तक रहता है। कुण्डली में शनि शोक, दुःख, परेशानी और विलम्ब आदि को दर्शाता है। शनि ग्रह को शनि देव के नाम से भी संबोधित किया जाता है। परमपिता परमात्मा ने शनिदेव को तीनों लोकों का न्यायाधीश नियुक्त किया है, इसलिए आपके साथ न्याय यही ग्रह करेगा और उसी के अनुसार फल भी देगा। क्या फल, किस प्रकार का फल, क्या फैसला शनि देव आपको आपके कर्मों के अनुसार देगें इसका भय हमेशा बना रहता है। न्याय प्रिय होने के साथ ही शनिदेव अधिक परिश्रमी भी हैं, शनि सभी ग्रहों में सबसे धीरे चलने वाले ग्रह हैं, शनि को बारह राशियों की एक परिक्रमा करने में लगभग 30 वर्षों का समय लगता है, जबकि चन्द्रमा को लगभग 27 दिन लगते हैं, शनि एक राशि में लगभग ढ़ाई वर्ष तक रहते हैं, इसी कारण शनि की साढ़े साती और ढ़ैया (ढ़ाई वर्ष) लम्बे समय तक जातक को प्रभावित करती है। साढ़े साती और ढ़ैया दोनों की ही गणना चन्द्रमा से की जाती है। चन्द्रमा को

ज्योतिष शास्त्र में मन और शनि को क्रूर ग्रह कहा गया है। अर्थ यह हुआ कि मन जोकि कोमल और भावुक है, एक क्रूर और निर्दयी ग्रह के प्रभाव में रहेगा और यदि शनि आपके अनुकूल नही है, तो शनि की ढ़ैया और साढे साती बहुत कष्ट दायक होती है।

शनि ग्रह के कुछ अन्य ज्योतिषीय संबंध निम्न प्रकार के हैं:-

1	कारक	संघर्ष
2	संबंध	भाई (छोटे/बड़े)
3	स्वभाव	क्रूर और पापी
4	गोत्र	कश्यप
5	दिन	शनिवार
6	वाहन	कौआ/गीध
7	रंग	कृष्ण/नीला
8	दिशा	पश्चिम
9	गुण (प्रकृति)	तमोगुणी
10	लिंग	नपुंसक
11	वर्ण (जाति)	शूद्र
12	तत्व	वायु
13	स्वाद	कसैला (करेले का स्वाद)
14	धातु	लोहा
15	ऋतु	शिशिर/सभी मौसम
16	दृष्टि विशेष	3,7,10 (पूर्ण दृष्टि)
17	भोजन	तिल
18	शारीरिक अंग	स्नायु (मांसपेशी)
19	अन्न दान	उड़द
20	द्रव्य दान	तेल
21	विंशोत्तरी महादशा	19 वर्ष
22	जप संख्या	23,000
23	रत्न	नीलम, (संस्कृत में नील रत्न)
24	उपरत्न	नीली, जमुनिया (कटैला), लाजवर्त
25	सहचरी	नीला देवी

26	चरादि	स्थिर
27	समिधा	शमी (खिजरे की लकड़ी)
28	शनि के मित्र ग्रह	बुध, शुक्र, राहु
29	शनि के सम ग्रह	बृहस्पति
30	शनि के शत्रु ग्रह	सूर्य, चन्द्रमा, मंगल, केतु
31	उच्च राशि	तुला (0° से 20° तक)
32	नीच राशि	मेष (0° से 20° तक)
33	मूल त्रिकोण राशि	कुम्भ (0° से 20° तक)
34	स्वग्रही राशि	कुम्भ (21° से 30° तक)
35	राशि स्वामी	मकर, कुम्भ
36	नक्षत्र स्वामी	पुष्य, अनुराधा, उत्तराभाद्रपद
37	शनि के आधी देवता	प्रजापति ब्रह्मा
38	शनि के प्रत्यधि देवता	यम
39	शनि ग्रह का कद	दीर्घ (लम्बा)
40	शनि ग्रह शुष्काादि में	शुष्क ग्रह

शनि ग्रह के कारकत्व

शनि ग्रह के कारकत्व अर्थात वे विशेष कारण या विषय वस्तुएं आदि जिनसे हम उस समय पूरी तरह प्रभावित होते हैं, जिस समय हम शनि ग्रह की दशा, गोचर, योग और अवस्था आदि में पूरी तरह प्रयत्नशील रहते हैं या उस आयु अवस्था आदि पर पहुंच जाते हैं, शनि ग्रह के वे सभी विशेष प्रभावित करने वाले तत्व निम्न प्रकार से हैं:-

आयु, जीवन, मृत्यु, दुर्भाग्य, संकट, अनादर, बीमारी, जड़ता, आलस्य, विघ्न, कष्ट, देह रोग, भ्रांति, भ्रम, गलतफहमी, अपंगता, आयुष्य, नपुंसकता, दुराचार, मिथ्या भाषण, वृद्धावस्था, काला रंग, भय, पतन, अपमान, निन्दा, क्रूर कर्म, लोहा या लोहे से बनी वस्तुएं, जेल जाना, गिरफ्तार होना, संघर्ष, पर्यटन, अपच (कब्ज), तेल, दास, विलम्ब, निष्पक्षता, हड़ताल, उर्जा संकट, धातु, कोयला, जौ, सरकारी इमारतें, जमाखोरी, मंहगाई, गरीबी, जनता, आजीविका, अनैतिक व्यवहार, अनेक विदेशी भाषाओं की जानकारी, न्यायाधीश, वायु विकार, दंत रोग, दुःख-शोक, सेवक-सेविकाओं, नौकरी, चोरी, पृथ्वी की गहराई से निकलने वाली वस्तु, लोभ-लालच, शिशिर ऋतु, मजदूर या मजदूरी, भारी वजन उठाने वाले वाहन या व्यक्ति, भिखारी, न्याय, अनुशासन और नियम आदि।

शनि ग्रह से संबंधित उपचार और दान आदि

शनि ग्रह को शांत, प्रसन्न और बलशाली बनाकर, शनि ग्रह के अशुभ प्रभावों को कम या न के बराबर करने और शुभ प्रभावों को बढ़ाकर और शीघ्र प्राप्त करने के लिए शनि ग्रह के लिये निम्नलिखित सरल, प्रभावशाली और पर्यावरणहितैषी उपचार और दान आदि का अपनी क्षमता और सामर्थ्यानुसार प्रयोग में लाएं जैसे प्रत्येक माह के किसी शुभ मुहूर्त पर पीपल का पौधा या कोई फलदार पौधा लगाएं। शनिवार के दिन व्रत रखें, काले रंग की गाय पालें या उसकी सेवा करें। वृद्धों और मजदूरों की मदद या सेवा करें और उन्हें प्रसन्न रखें। शनि ग्रह की वैदिक रीति से पूजा करें या करवाएं। नीलम धारण करें, बीज मंत्र का जप करें, वैदिक मंत्र का जप करवाएं, भगवान शिव की पूजा करें, महामृत्युंजय का जप करें, अमावस्या को व्रत करें, खट्टे पदार्थ दान करना, काली वस्तुओं का दान शनिवार के दिन करना चाहिए जैसे कोयला, उड़द की दाल, लोहा या लोहे से बनी वस्तुएं, काले वस्त्र, कम्बल, तेल, नारियल, मिठाई, फल और घृत आदि। यदि सम्भव हो सके तो लोबान, खस, शतकुसुम, धमनी, कस्तूरी और खिल्ला आदि के जल से स्नान भी करना चाहिए।

शनि ग्रह के लिए मंत्र

निम्नलिखित शनि ग्रह के मंत्रों में से किसी भी एक मंत्र का जप श्रद्धा और विश्वास से किसी शुभ मुहूर्त या शुक्लपक्षीय शनिवार के दिन संध्याकाल से आरम्भ करना चाहिये। शनि ग्रह के मंत्र का जप अपने सामर्थ्यानुसार, माला से, पश्चिम दिशा की ओर मुख करके करें। यदि सम्भव हो तो तेल का दीपक जलाकर प्रतिदिन या शनिवार और बुधवार को अवश्य करना चाहिये। शनि ग्रह के मंत्र जप के पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए शनि ग्रह के वैदिक मंत्र या पौराणिक मंत्र का जप करना या करवाना चाहिये, और अंत में दशमांश संख्या का हवन भी शमी (खिजरे की लकड़ी) या आम की समिधा से करना चाहिये।

वैदिक मंत्र

ऊँ शन्नो देवीरभिष्टय आपो भवन्तु पीतये। शं योरभिस्रवन्तु नः।।

पौराणिक मंत्र

ऊँ नीलांजनसमाभासं रविपुत्रं यमाग्रजम्।

छायामार्तण्डसंभूतं नमामी शनैश्चरम्।।

ध्यान मंत्र

इन्द्रनीलद्युतिः शूली वरदोगृध्रवाहनः।

बाणबाणासनधरः कर्तव्योऽर्कसुतस्तथा।।

शनि ग्रह के लिए गायत्री मंत्र

ऊँ शनैश्चराय विद्महे

छायापुत्राय धीमहि।

तन्नोः मंदः प्रचोदयात्।।

बीज मंत्र

ऊँ प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः।

तांत्रोक्त मंत्र

ऊँ ऐं ह्रीं श्रीं शनैश्चराय नमः।

ऊँ क्लीं क्लीं शनये नमः।

सामान्य मंत्र

ऊँ शं शनैश्चराय नमः।

श्री घनश्याम शरणं ममः।

उपरोक्त किन्हीं एक या अधिक मंत्रों का जप श्रद्धा और विश्वास से संध्याकाल के समय करना चाहिये।

शनि ग्रह का रत्न

नीलम (blue sapphire) शनि ग्रह का रत्न है और शनि ग्रह का प्रतिनिधित्व करता है। शुद्ध नीलम रत्न धारण करने के परिणाम पांच वर्ष तक प्राप्त होते हैं। शुद्ध नीलम रत्न के अभाव में शनि ग्रह के उपरत्नों का भी प्रयोग किया जा सकता है जैसे :- नीली, जमुनिया, लाजवर्त, कटैला आदि।

नीलम रत्न की सामान्य पहचान

नीलम रत्न देखने में नीला, चमकीला और पारदर्शी होता है। हाथ में लेने पर मुलायम, चिकना और अपेक्षाकृत हल्का लगने वाला होता है, गहरे नीले रंग के नीलम रत्न को बैंकाक का नीलम रत्न कहते हैं, जबकि हल्के नीले रंग के नीलम रत्न को सीलोनी नीलम रत्न कहते हैं।

नीलम रत्न की सामान्य परीक्षण विधियां

नीलम रत्न को तेज धूप में रखने पर उससे फव्वारे की तरह नीली किरणें निकलती हैं, गाय के दूध की बूंद नीलम रत्न पर रखने से नीले रंग की हो जाती है, कांच के पानी भरे गिलास में नीलम रत्न डालने से उसमें नीली किरणें निकलती हैं। नीलम रत्न बिल्कुल बेदाग नही मिलता इसमें थोड़ा बहुत रेशा अवश्य होता है।

नीलम रत्न धारण करने की विधि

नीलम रत्न को सोने की अंगूठी या लॉकेट मे बनवाकर, उसकी प्राणप्रतिष्ठा करके या करवाकर, किसी शुभ मुहूर्त में या शुक्ल पक्ष के शनिवार के दिन या शनि की होरा में या शनि ग्रह के नक्षत्र वाले दिन में सांयकाल के समय मध्यमा अंगुली (middle finger) में धारण करना चाहिये।

नीलम रत्न धारण करने के लाभ

जन्म पत्रिका में शनि ग्रह के स्वामित्व भाव, शनि ग्रह के स्थित भाव, शनि ग्रह की दृष्टिभाव और शनि ग्रह की दशा आदि में शनि ग्रह के शुभ प्रभावों को बढ़ाने और अशुभ प्रभावों को कम करने में नीलम रत्न

सहायक होता है, साथ ही व्यवसाय में लाभ, स्वास्थ्य और वंश वृद्धि, गैस की बीमारी से शीघ्र लाभ आदि में भी सहायक सिद्ध होता है।

नीलम रत्न धारण करने के लिए निर्देश और सावधानियां

नीलम रत्न के पूर्ण शुभ फल प्राप्त करने के लिए अंगूठी या लॉकेट का निचला भाग भी खुला होना चाहिए ताकि नीलम रत्न आपके शरीर को छू सके। नीलम रत्न धारण करने के बाद यदि संभव हो सके तो तामसिक भोजन का प्रयोग न करें, नही तो कम से कम शनिवार के दिन तामसिक भोजन का प्रयोग बिलकुल न करें, धैर्य रखें, क्रोध न करें, झूठ न बोलें और शनिवार के दिन यथा-शक्ति शनि ग्रह का मंत्र जप करें। **नीलम रत्न धारण करने के बाद 27 दिन के अन्दर यदि आपको प्रतिकूलता का अनुभव हो तो तुरंत ज्योतिषीय सलाह लें।**

राहु ग्रह की पौराणिक कथा

हिरण्यकश्यपु की पुत्री का नाम सिंहिका था, जिसका विवाह विप्रचिति के साथ हुआ उनकी एक सन्तान हुई जिसका नाम था स्वरभानु। स्वरभानु के मन में देवताओं की तरह पूजे जाने और अमर होने की प्रबल इच्छा थी, इसलिए उसने घोर तपस्या की और देवताओं की तरह पूजे जाने का वरदान तो प्राप्त कर लिया पर असुर होने के कारण अमरता का वरदान नही मिल सका। एक बार जब सुरों और असुरों ने मिलकर समुद्र मंथन किया और जब समुद्र मंथन से अमृत कलश निकला तो सभी सुर और असुर अमृत पान करने के लिए लालायित हो गए और आपस में झगड़ा और वाद-विवाद आरम्भ हो गया, इसी बीच भगवान विष्णु मोहिनी रूप धारण करके सभी को अमृत पिलाने की बात करते हैं, भगवान विष्णु के मोहिनी रूप के आगे सभी मोहित हो गए और उनकी हां में हां मिलाने लगे। मोहिनी रूपी भगवान विष्णु ने देवताओं को पहले अमृत पिलाना शुरू कर दिया, स्वरभानु जो इस अमर होने के अवसर का बड़ी बैचेनी से इंतजार कर रहा था और देवताओं को अमृत पान करते हुए देख रहा था, थोड़ी ही देर में वह समझ गया कि अमृत केवल सुरों को ही पिलाया जाएगा, असुरों को नही, इसलिए स्वरभानु देवता (सुर) के वेश में सूर्य और चन्द्रमा के बीच जाकर बैठ गया, जिसका किसी को पता नही चला और जैसे ही स्वरभानु ने अमृत पिया, उसी समय सूर्य और चन्द्रमा ने स्वरभानु को पहचान लिया और मोहिनी रूपी श्री हरी विष्णु भगवान को बता दिया। भगवान विष्णु ने उसी समय स्वरभानु की गर्दन पर सुदर्शन चक्र से प्रहार किया और सिर धड़ से अलग कर दिया, अमृत तत्व पान करने के बाद स्वरभानु की मृत्यु नही हुई बल्कि एक से दो हो गए, इस तरह स्वरभानु का सिर राहु के नाम से प्रसिद्ध हुआ और स्वरभानु का धड़ केतु के नाम से। सूर्य और चन्द्रमा का इस प्रकार से मोहिनी रूप धारी श्री हरि विष्णु को शिकायत करना बहुत भारी पड़ा क्योंकि अमृत पान के कारण स्वरभानु राहु और केतु के रूप में सदा के लिए अमर हो गया और ब्रह्मा जी ने दोनों को नव ग्रहों में स्थान भी दे दिया। तभी से राहु और केतु, सूर्यदेव और चन्द्रदेव से द्वेष रखतें हैं और इसी बदले की भावना से राहु और केतु अमावश्या के दिन सूर्य पर और पूर्णिमा के दिन चन्द्रमा पर ग्रहण बनकर उनको पीड़ित करतें हैं।

राहु ग्रह की पौराणिक कथा का ज्योतिषीय संबंध

असुरी बुद्धि के साथ महत्वकांक्षी, बहुत ऊंची सोच और सफलता पाने के लिए किसी भी हद तक जाने का साहस करना चाहे तपस्या का मार्ग हो या छल का, साथ ही द्वेषभाव से बदला लेने की भावना राहु में कूट-कूट कर भरी होती है।

राहु अशुभ ग्रहों में गिना जाता है। इसको छाया ग्रह भी कहते हैं, क्योंकि यह सूर्य और चन्द्रमा के मार्गों के आपस में टकराने से बनता है। यह हमेशा ही केतु से 180° की दूरी पर होता है। यह लगभग एक दिन में 3 मिनट चलता है, और लगभग 18 महीनों तक एक राशि में रहता है। कुंडली में भय और डर को दर्शाता है। राहु काल को अशुभ माना जाता है। राहु को एक पापी ग्रह की श्रेणी में रखा गया है, जो जातक को अनेकों प्रकार के कष्ट, परेशानी आदि से घेरे रखता है, जीवन में अचानक घटनाओं का घटित होना (अच्छी या बुरी दोनों ही), राहु के राशि बदलने या दशाओं के बदलने के कारण होता है, कुछ विशेष अवस्थाओं को छोड़कर राहु क्लेशकारी और परेशान करने वाला ही होता है। यदि यह कष्ट दे रहा हो तो इसकी शांति आवश्यक है।

राहु ग्रह के कुछ अन्य ज्योतिषीय संबंध निम्न प्रकार के हैं:-

1	कारक	दु:ख
2	संबंध	शत्रु
3	स्वभाव	क्रूर और पापी
4	गोत्र	पैठीनस
5	दिन	शनिवार
6	वाहन	शेर
7	रंग	नीला/कृष्ण/धूम्र
8	दिशा	पश्चिम दक्षिण (South-West)
9	गुण (प्रकृति)	तमोगुणी
10	लिंग	स्त्री/पुरूष
11	वर्ण (जाति)	निम्न वर्ग, शूद्र
12	तत्व	वायु/छाया
13	स्वाद	कटु (कड़वा)
14	धातु	लोहा/सीसा/मिट्टी के बर्तन
15	ऋतु	सभी मौसम
16	दृष्टि विशेष	5,7,9 (पूर्ण दृष्टि)
17	भोजन	उड़द
18	शारीरिक अंग	हड्डियां
19	अन्न दान	सप्त धान्य
20	द्रव्य दान	तेल
21	विंशोत्तरी महादशा	18 वर्ष

22	जप संख्या	18,000
23	रत्न	गोमेद, (संस्कृत में तपोमणि)
24	उपरत्न	आंनिक्स/फिरोजा/साफी
25	सहचरी	कराली
26	चरादि	चर
27	समिधा	दूर्वा (दूब)
28	राहु के मित्र ग्रह	शुक्र, शनि
29	राहु के सम ग्रह	बुध, बृहस्पति
30	राहु के शत्रु ग्रह	सूर्य, चन्द्रमा, मंगल, केतु
31	उच्च राशि	वृष/मिथुन (0° से 20° तक)
32	नीच राशि	वृश्चिक/धनु (0° से 20° तक)
33	मूल त्रिकोण राशि	कुम्भ/ मिथुन (0° से 20° तक)
34	स्वग्रही राशि	कन्या/कुम्भ
35	राशि स्वामी	कन्या/कुम्भ
36	नक्षत्र स्वामी	आर्द्रा, स्वाती, शतभिषा
37	राहु के आधी देवता	सर्प
38	राहु के प्रत्यधि देवता	काल (दुर्गा)
39	राहु ग्रह का कद	दीर्घ (लम्बा)
40	राहु ग्रह शुष्काादि में	शुष्क ग्रह

राहु ग्रह के कारकत्व

राहु ग्रह के कारकत्व अर्थात वे विशेष कारण या विषय वस्तुएं आदि जिनसे हम उस समय पूरी तरह प्रभावित होते हैं, जिस समय हम राहु ग्रह की दशा, गोचर, योग और अवस्था आदि में पूरी तरह प्रयत्नशील रहते हैं या उस आयु अवस्था आदि पर पहुंच जाते हैं, राहु ग्रह के वे सभी विशेष प्रभावित करने वाले तत्व निम्न प्रकार से है:-

भटकाव, कठोर वाणी, जुआ, ठगी, धोखा, कुतर्क, संचय, कुशल, भ्रम, उलझन, यात्रा पर्यटन, बुढ़ापा, वाहन, वायु व दमा रोग, बेहोशी के दौरे, कारावास, अनेकों भाषाएं, वैर विरोद्ध, चुगली करना, छल कपट, अपंगता, मिरगी, अपच (कब्ज), कुष्ठ रोग, क्षय रोग, चेचक, वृद्ध जनों का कारक, पाखण्डमति, झूठ बोलना, बुद्धिहीन, गति शीलता, यात्राएं, सांप का काटना, शंकाओं, चोरी, शेयर बाजार, दुष्टता, त्वचा की बीमारियां, खुजली, फोडे-फुन्सी, विदेश, वैराग्यकारक, शरीर में सूजन, धार्मिक तीर्थ यात्रा, दादा, छाया, अन्धेरा, क्लेश,

दुर्घटना, बाधा, कौआ, गंदगी, लॉटरी, घुडदौड़, इंटरनैट, नशा, तम्बाकू, चमत्कार, तंत्र विद्या, समुद्र पार की यात्रा, चालाकी, संकीर्ण सोच आदि।

राहु ग्रह से संबंधित उपचार और दान आदि

राहु ग्रह को शांत, प्रसन्न और बलशाली बनाकर, राहु ग्रह के अशुभ प्रभावों को कम या न के बराबर करने और शुभ प्रभावों को बढ़ाकर और शीघ्र प्राप्त करने के लिए राहु ग्रह के लिये निम्नलिखित सरल, प्रभावशाली और पर्यावरणहितैषी उपचार और दान आदि का अपनी क्षमता और सामर्थ्यानुसार प्रयोग में लाएं जैसे प्रत्येक माह के किसी शुभ मुहूर्त पर तुलसी, पीपल या कोई फलदार वृक्ष का पौधा लगाएं। शनिवार के दिन व्रत रखें। काले रंग की गाय पालें और उसकी सेवा करें। पक्षियों को पंचनाजा डालें। वृद्धों और मजदूरों की सेवा करें और उन्हें प्रसन्न रखें। राहु ग्रह की वैदिक रीति से पूजा करें या करवाएं। गोमेद रत्न या फिरोजा धारण करें, सप्तधान्य, कोयला, मूली, सरसों, कम्बल, उड़द, सीसा, नारियल, ताम्र पात्र, सरसों का तेल दान करें, महामृत्युंजय मंत्र का जप करें या करवाएं, सप्त अक्षरी मंत्र का जप करें, सुन्दरकाण्ड़ का पाठ करवाएं, हनुमान जी, दुर्गा जी, और नाग की पूजा करें आदि। नीली या नीली वस्तुओं का दान शनिवार के दिन करना चाहिए जैसे नीला कपड़ा, नीले रंग के वस्त्र, मिठाई, फल और घृत आदि। यदि सम्भव हो सके तो मुत्थंरा, कस्तूरी, लोबान, लाल चन्दन, बिल्व पत्र और तिल पत्र आदि के जल से स्नान भी करना चाहिए।

राहु ग्रह के लिए मंत्र

निम्नलिखित राहु ग्रह के मंत्रों में से किसी भी एक मंत्र का जप श्रद्धा और विश्वास से किसी शुभ मुहूर्त या शुक्लपक्षीय शनिवार के दिन रात्रि से आरम्भ करना चाहिये। राहु ग्रह के मंत्र का जप अपने सामर्थ्यानुसार, माला से, पश्चिम दक्षिण दिशा की ओर मुख करके करें। यदि सम्भव हो तो तेल का दीपक जलाकर प्रतिदिन या शनिवार और बुधवार को अवश्य करना चाहिये। राहु ग्रह के मंत्र जप के पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए राहु ग्रह के वैदिक मंत्र या पौराणिक मंत्र का जप करना या करवाना चाहिये, और अंत में दशमांश संख्या का हवन भी दूर्वा (दूब) या आम की समिधा से करना चाहिये।

वैदिक मंत्र

ऊँ कया नश्चित्र आ भुवदूती सदा वृधः सखा। कया शचिष्ठया वृता।।

पौराणिक मंत्र

ऊँ अर्धकायं महावीर्यं चन्द्रादित्यविमर्दनम्।

सिंहिकागर्भसंभूतं तं राहुं प्रणमाम्यहम्।।

ध्यान मंत्र

करालवदनः खड्गचर्मशूली वरप्रदः।

नीलसिंहासनस्थश्च राहुरत्र प्रशस्यतेः।।

राहु ग्रह के लिए गायत्री मंत्र

ऊँ शिरोरूपाय विद्‌महे

पद्‌महस्ताय धीमहि।

तन्नोः राहुः प्रचोदयात्‌।।

बीज मंत्र

ऊँ भ्रां भ्रीं भौं सः राहवे नमः।

तांत्रोक्त मंत्र

ऊँ ऐं ह्रीं राहवे नमः।

ऊँ ह्रीं ह्रीं राहवे नमः।

सामान्य मंत्र

ऊँ रां राहवे नमः।

श्री बाल-कृष्ण शरणं ममः।

उपरोक्त किन्हीं एक या अधिक मंत्रों का जप श्रद्धा और विश्वास से रात्रि के समय करना चाहिये।

राहु ग्रह का रत्न

गोमेद राहु ग्रह का रत्न है और राहु ग्रह का प्रतिनिधित्व भी करता है। शुद्ध गोमेद रत्न धारण करने का परिणाम तीन वर्ष तक प्राप्त होता है। शुद्ध गोमेद रत्न के अभाव में राहु ग्रह के उपरत्नों का भी प्रयोग किया जा सकता है जैसेः- फिरोजा, साफी, तुरसावा आदि।

गोमेद रत्न की सामान्य पहचान

गोमेद रत्न देखने में गोमूत्र के हल्के पीले रंग का और कुछ लालिमा लिए हुए होता है या शहद के रंग की तरह होता है, हाथ में लेने पर चिकना और भारीपन वाला होता है।

गोमेद रत्न की सामान्य परीक्षण विधियां

गोमेद रत्न को 24 घण्टे गोमूत्र में रखने पर गोमूत्र का रंग बदल जाता है। कपड़े या लकड़ी के बुरादे से गोमेद रत्न को रगड़ने पर गोमेद रत्न की चमक में क्षीणता आ जाती है।

गोमेद रत्न धारण करने की विधि

गोमेद रत्न को पंच धातु (सोना, चांदी, तांबा, सीसा और लोहा) या त्रिधातु (चांदी, तांबा और सीसा) के मिश्रण में या सोना, चांदी या लोहे की अंगूठी या लॉकेट में बनवाकर, उसकी प्राणप्रतिष्ठा करके या

करवाकर, किसी शुभ मुहूर्त में या शुक्ल पक्ष के शनिवार के दिन या शनि की होरा में या राहु ग्रह के नक्षत्र वाले दिन में सूर्य अस्त होने के बाद मध्यमा अंगुली (middle finger) में धारण करना चाहिये।

गोमेद रत्न धारण करने के लाभ

जन्मपत्रिका में राहु ग्रह जिस भाव में स्थित हो, राहु ग्रह के स्वामित्व भाव, राहु ग्रह की दृष्टि भाव और राहु ग्रह की दशा आदि में राहु ग्रह के शुभ प्रभावों को बढ़ाने और अशुभ प्रभावों को कम करने में गोमेद रत्न सहायक होता है, साथ ही बीमारियों से बचाव, कमरदर्द और घुटनों का दर्द कम करने, शत्रुओं पर विजय और मानसिक तनाव कम या समाप्त करने तथा उदर रोग को कम करने में भी सहायक सिद्ध होता है। राजनीति और प्रशासन क्षेत्र में, कोर्ट-कचहरी, मुकदमे आदि में भी शीघ्र सफलता के लिए गोमेद रत्न धारण करना सहायक सिद्ध होता है।

गोमेद रत्न धारण करने के लिए निर्देश और सावधानियां

गोमेद रत्न के पूर्ण शुभ फल प्राप्त करने के लिए अंगूठी या लॉकेट का निचला भाग भी खुला होना चाहिए ताकि गोमेद रत्न आपके शरीर को छू सके। गोमेद रत्न धारण करने के बाद यदि संभव हो सके तो तामसिक भोजन का प्रयोग न करें, नही तो कम से कम शनिवार के दिन तामसिक भोजन का प्रयोग बिलकुल न करें, धैर्य रखें, क्रोध न करें, झूठ न बोलें और शनिवार के दिन यथा शक्ति राहु ग्रह का मंत्र जप करें। **गोमेद रत्न धारण करने के बाद 27 दिन के अन्दर यदि आपको प्रतिकूलता का अनुभव हो तो तुरंत ज्योतिषीय सलाह लें।**

केतु ग्रह की पौराणिक कथा

पुराणों के अनुसार जब मोहिनी रूपी श्री हरि ने स्वरभानु नामक दैत्य के अपने सुदर्शन चक्र से दो भाग किये तो ऊपरी भाग को राहु की पहचान मिली जिसे सिंहिका (असूया) अपने साथ ले गई थी और धड़ एक मिनी नामक ब्राह्मण के पास था, इसी धड़ को भगवान विष्णु ने सर्प का सिर दे दिया और यह धड़ केतु के नाम से विख्यात हुआ। राहु की तुलना में केतु अधिक कष्टदायक नही होता है।

केतु ग्रह की पौराणिक कथा का ज्योतिषीय संबंध

केतु भी अशुभ ग्रहों में गिना जाता है। इसको छाया ग्रह भी कहते हैं। क्योंकि यह सूर्य और चन्द्रमा के मार्गों के आपस में टकराने से बनता है। यह हमेशा ही राहु से 180° की दूरी पर होता है यह एक दिन में लगभग 3 मिनट (angel वाले मिनट) चलता है, और लगभग 18 महीनों तक एक राशि में रहता है और कुंडली में शारीरिक कष्टों को दर्शाता है। इसको मंगल के गुणों वाला भी माना जाता है। अधिकांश समय केतु भी राहु की तरह वक्री (उल्टा) ही चलता है और अधिकतर मंगल की तरह जातक को फल देता है, परन्तु जीवन में वैराग और मोक्ष की बात की जाए तो मेरी दृष्टि में केवल केतु ही जीव को पूर्ण रूप से वैरागी बना सकता है। दशा केतु की हो, जीवन के सभी कर्तव्य पूरे हो चुके हों और जन्म पत्रिका में केतु बारहवें घर में स्थित हो तो मोक्ष की गारंटी भी देता है। यदि मध्यआयु में ही केतु की दशा जीव को बैरागी बना दे तो जीवन में असफलता और मानसिक तनाव का कारण भी केतु ही होता, क्योंकि केतु यदि शुभ ग्रहों से सम्बन्ध स्थापित न कर सका तो वैराग के साथ विवेक थोड़ा कम होता है, जो एक पारिवारिक व्यक्ति के लिए कष्टदायक होता है। कुछ जन्म पत्रिकाओं में मैंने देखा है कि बृहस्पति भी वैराग और आध्यात्म देता है,

पर साथ में विवेक भी देता है, जिससे जातक वैरागी जीवन के साथ-साथ पारिवारिक और सामाजिक जीवन को भी सफलता के साथ निभा लेता है।

केतु ग्रह के कुछ अन्य ज्योतिषीय संबंध निम्न प्रकार के हैं:-

1	कारक	कष्ट
2	संबंध	बाधा (रूकावट)
3	स्वभाव	क्रूर, पापी
4	गोत्र	जैमिनी
5	दिन	बृहस्पतिवार
6	वाहन	सर्प, गीध, कपोत
7	रंग	धुंए के रंग का
8	दिशा	पश्चिम-दक्षिण (South-West)
9	गुण (प्रकृति)	तमोगुणी / सतोगुणी
10	लिंग	नपुंसक/पुरूष
11	वर्ण (जाति)	शूद्र
12	तत्व	छाया/ पृथ्वी/आकाश
13	स्वाद	कटु (कड़वा)
14	धातु	सीसा
15	ऋतु	सभी मौसम
16	दृष्टि विशेष	5,7,9 (पूर्ण दृष्टि)
17	भोजन	चना
18	शारीरिक अंग	चर्म (Skin)
19	अन्न दान	काला तिल
20	द्रव्य दान	तेल
21	विंशोत्तरी महादशा	7 वर्ष
22	जप संख्या	17,000
23	रत्न	लहसुनिया, (संस्कृत में वैदूर्य)
24	उपरत्न	कर्केतक, संघीय, श्येनाक्ष
25	सहचरी	चित्रलेखा
26	चरादि	चर

27	समिधा	कुशा
28	केतु के मित्र ग्रह	मंगल, शुक्र
29	केतु के सम ग्रह	बुध, बृहस्पति
30	केतु के शत्रु ग्रह	सूर्य, चन्द्रमा, शनि, राहु
31	उच्च राशि	वृश्चिक/ धनु (0° से 20° तक)
32	नीच राशि	वृष / मिथुन (0° से 20° तक)
33	मूल त्रिकोण राशि	सिंह / धनु (0° से 20° तक)
34	स्वग्रही राशि	वृश्चिक/मीन
35	राशि स्वामी	वृश्चिक/मीन
36	नक्षत्र स्वामी	अश्विनी, मधा, मूल
37	केतु के आधी देवता	ब्रह्मा
38	केतु के प्रत्यधि देवता	चित्रगुप्त
39	केतु ग्रह का कद	मध्यम (सामान्य)
40	केतु ग्रह शुष्कादि में	शुष्क ग्रह

केतु ग्रह के कारकत्व

केतु ग्रह के कारकत्व अर्थात वे विशेष कारण या विषय वस्तुएं आदि जिनसे हम उस समय पूरी तरह प्रभावित होते हैं, जिस समय हम केतु ग्रह की दशा, गोचर, योग और अवस्था आदि में पूरी तरह प्रयत्नशील रहते हैं या उस आयु अवस्था आदि पर पहुंच जाते हैं, केतु ग्रह के वे सभी विशेष प्रभावित करने वाले तत्व निम्न प्रकार से है:-

वैद्य, चिकित्सक, सभी प्रकार का धन वैभव, सम्पन्नता, पाषाण (पत्थर), उदर (पेट), दुविधापूर्ण मानसिकता, ब्रह्म ज्ञान, वेदांत, अध्यात्म, विरक्त योगी, संघर्ष, औजारों के उपयोग में कुशलता, षड़यंत्र, अग्निकांड, धुआं, अपराधी, वैराग्य, घाव, अत्याचार, दर्द, ज्वर, शत्रुओं को नुकसान पहुंचाना, जादू-टोना, कुत्ता, सींग वाले पशु, मोक्ष, सास-ससुर, नाना, दादी, कठिन कार्य में सफलता, रोग, सभी प्रकार के चर्म रोग, दाद-खाज, कुष्ठ रोग, मानसिक रोगी, कोर्ट-कचहरी, यात्राऐं, छुपी हुई वस्तुओं या ज्ञान की खोज करने वाला, पारलौकिक प्रभावों, किसी विशेष कार्य में प्रसिद्धि के शिखर पर पहुँचाने में सहायक, आध्यात्मिकता आदि।

केतु ग्रह से संबंधित उपचार और दान आदि

केतु ग्रह को शांत, प्रसन्न और बलशाली बनाकर, केतु ग्रह के अशुभ प्रभावों को कम या न के बराबर करने और शुभ प्रभावों को बढ़ाकर और शीघ्र प्राप्त करने के लिए केतु ग्रह के लिये निम्नलिखित सरल, प्रभावशाली और पर्यावरणहितैषी उपचार और दान आदि का अपनी क्षमता और सामर्थ्यानुसार प्रयोग में लाऐं जैसे प्रत्येक माह के किसी शुभ मुहूर्त पर पीपल का पौधा, तुलसी का पौधा या कोई फलदार पौधा लगाएं। बृहस्पतिवार के

दिन व्रत रखें। काले, सफेद, लाल या चितकबरी रंग की गाय पालें या उसकी सेवा करें। संत महात्माओं की सेवा या उनकी मदद करें। केतु ग्रह की वैदिक रीति से पूजा करें या करवाएं। लहसुनिया (वैदूर्य) रत्न धारण करें, वैदिक या पौराणिक मंत्र का जप करवाएं, सप्त अक्षरी बीजक मंत्र का जप करें, केतु को प्रसन्न करने के लिए भगवान शिव की पूजा और महामृत्युंजय का पाठ करें। मिश्रित रंगों की वस्तुओं का दान शनिवार के दिन करना चाहिए, जैसे पंच धान्य, सप्त धान्य, तेल और शस्त्र, लोहा या लोहे से बनी वस्तुएं, नारियल, कम्बल, मिठाई, फल और घृत आदि का दान उत्तम बताया गया है। यदि सम्भव हो सके तो लोबान, लाल चन्दन, कस्तूरी, मूत्थंरा और तिल पत्र आदि के जल से स्नान भी करना चाहिए।

केतु ग्रह के लिए मंत्र

निम्नलिखित केतु ग्रह के मंत्रों में से किसी भी एक मंत्र का जप श्रद्धा और विश्वास से किसी शुभ मुहूर्त या शुक्लपक्षीय बृहस्पतिवार के दिन रात्रि के समय से आरम्भ करना चाहिये। केतु ग्रह के मंत्र का जप अपने सामर्थ्यानुसार, माला से, पश्चिम दक्षिण दिशा की ओर मुख करके करें। यदि सम्भव हो तो तेल का दीपक जलाकर प्रतिदिन या शनिवार और बुधवार को अवश्य करना चाहिये। केतु ग्रह के मंत्र जप के पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए केतु ग्रह के वैदिक मंत्र या पौराणिक मंत्र का जप करना या करवाना चाहिये, और अंत में दशमांश संख्या का हवन भी कुशा या आम की समिधा से करना चाहिये।

वैदिक मंत्र

ऊँ केतुं कृण्वन्नकेतवे पेशोमर्या अपेशसे। सुमुषद्भिरजायथाः।।

पौराणिक मंत्र

पलाशपुष्पसंड्काशं तारकाग्रहमस्तकम्। रौद्रं रौद्रात्मकं घोरं तं केतुं प्रणमाम्यहम्।।

ध्यान मंत्र

धूम्रा द्विबाहवः सर्वे गदिनो विकृताननाः।

गृध्रासनगता नित्यं केतवः स्युर्वरप्रदाः।।

केतु के लिए गायत्री मंत्र

ऊँ धूम्रवर्णाय विद्महे

कपोतवाहनाय धीमहि।

तन्नोः केतुः प्रचोदयात्।।

बीज मंत्र

ऊँ स्रां स्रीं स्रौं सः केतवे नमः।

तांत्रोक्त मंत्र

ऊँ कें केतवे नमः।

ऊँ ह्रीं केतवे नमः।

सामान्य मंत्र

ऊँ कें केतवे नमः।

श्री रघुनाथ शरणं ममः।

उपरोक्त किन्हीं या अधिक मंत्रों का जप श्रद्धा और विश्वास से रात्रि के समय करना चाहिये।

केतु ग्रह का रत्न

लहसुनिया (cat's eye stone) केतु ग्रह का रत्न है और केतु ग्रह का प्रतिनिधित्व करता है। शुद्ध लहसुनिया रत्न धारण करने का परिणाम तीन वर्ष तक प्राप्त होते हैं। शुद्ध लहसुनिया रत्न के अभाव में केतु ग्रह के उपरत्न का भी प्रयोग कर सकते हैं जैसेः- कर्केतक, संघीय, श्येनाक्ष, गोदन्ती आदि।

लहसुनिया रत्न की सामान्य पहचान

लहसुनिया रत्न देखने में एक ओर से कांच की सी आभा वाला होता है और दूसरी ओर से पत्थर की तरह दिखाई देता है। लहसुनिया रत्न में एक ओर सफेद धारियां होती हैं, बिल्ली की आंखों की तरह दिखता है व हाथ में लेने पर वजनी प्रतीत होता है।

लहसुनिया रत्न की सामान्य परीक्षण विधि

लहसुनिया रत्न को अंधेरे में रखकर देखने पर बिल्ली की आंख की तरह दिखाई देता है, लहसुनिया रत्न अधिक आंच में देर तक रखने पर अपना रंग बदल लेता है और टूट जाता है। लहसुनिया रत्न कपड़े से रगड़ने पर और अधिक चमकदार हो जाता है। लहसुनिया रत्न लोहे की भारी चोट से धारियों की तरफ से टूट जाता है।

लहसुनिया रत्न धारण करने की विधि

लहसुनिया रत्न को पंच धातु (सोना, चांदी, तांबा, सीसा और लोहा) या त्रिधातु (चांदी, तांबा और सीसा) के मिश्रण में या चांदी की अंगूठी या लॉकेट में बनवाकर, उसकी प्राणप्रतिष्ठा करके या करवाकर किसी शुभ मुहूर्त में या शुक्ल पक्ष के बृहस्पतिवार के दिन या शनि की होरा में या केतु ग्रह के नक्षत्र वाले दिन सूर्यास्त के बाद अनामिका अंगुली (ring finger) में धारण करना चाहिये।

लहसुनिया रत्न धारण करने के लाभ

जन्मपत्रिका में केतु ग्रह के स्वामित्व भाव, केतु ग्रह जिस भाव में स्थित हो, केतु ग्रह की दृष्टि भाव और केतु ग्रह की दशा आदि में केतु ग्रह के शुभ प्रभावों को बढ़ाने और अशुभ प्रभावों को कम करने में लहसुनिया रत्न सहायक होता है, साथ ही सरकारी कार्यों में सफलता, दुर्घटना आदि से बचाव, पित्तज व रक्त रोगों में सुधार, शत्रुओं से बचाव, सागर पार की यात्रा, रोगों से मुक्ति आदि में भी सहायक सिद्ध होता है।

लहसुनिया रत्न धारण करने के लिए निर्देश और सावधानियां

लहसुनिया रत्न के पूर्ण शुभ फल प्राप्त करने के लिए अंगूठी या लॉकेट का निचला भाग भी खुला होना चाहिए ताकि लहसुनिया रत्न आपके शरीर को छू सके। लहसुनिया रत्न धारण करने के बाद यदि संभव हो सके तो तामसिक भोजन का प्रयोग न करें, नही तो कम से कम बुधवार के दिन तामसिक भोजन का प्रयोग बिलकुल न करें, धैर्य रखें, क्रोध न करें, झूठ न बोलें और बुधवार के दिन यथा-शक्ति केतु ग्रह का मंत्र जप करें। **लहसुनिया रत्न धारण करने के बाद 27 दिन के अन्दर यदि आपको प्रतिकूलता का अनुभव हो तो तुरंत ज्योतिषीय सलाह लें।**